



MP - PSC

राज्य सिविल सेवा

PRE

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग - 3

विश्व और भारत का भूगोल

MP-PSC PRE

विश्व और भारत का भूगोल

S.No.	Chapter Name	Page No.
इकाई – 3 विश्व और भारत का भूगोल		
1.	प्रमुख भौतिक विशेषताएँ	1
2.	कृषि	9
3.	वैश्विक खनिज एवं ऊर्जा संसाधन	16
4.	भारत के भौगोलिक प्रदेश	30
5.	प्रमुख अपवाह तंत्र	61
6.	भारतीय जलवायु	88
7.	भारत में मृदा	99
8.	भारत में कृषि	107
9.	भारतीय वन एवं वन्यजीव	125
10.	जैव विविधता संरक्षण	138
11.	भारत में जल संसाधन	150
12.	भारत में ऊर्जा संसाधन	158
13.	भारत में खनिज संसाधन	181
14.	भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र	190
15.	भारत में परिवहन	196
16.	सामाजिक भूगोल	209

1 अध्याय

प्रमुख भौतिक विशेषताएँ



पर्वत

- विश्व पटल का 27% बनाता है।
- पृथ्वी पर 80% मीठे पानी के स्रोत यहीं हैं।
- विश्व की 12% जनसंख्या यहाँ निवास करती है।
- 50% से अधिक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पर्वतीय संसाधनों पर निर्भर हैं।

पर्वतों का वर्गीकरण

1. ऊँचाई के आधार पर

- A. निम्न पर्वत: 700 - 1,000 m.
- B. खुरदरे (rough) पर्वत: 1000 m - 1,500 m
- C. ऊबड़-खाबड़ पहाड़ : 1,500 - 2,000 m.
- D. ऊँचे पर्वत: > 2,000 m.

2. स्थिति के आधार पर

A. महाद्वीपीय पर्वत

- a. **तटीय पर्वत**: तटों के निकट; उदाहरण: **अप्लेशियन** और **रॉकीज** (उत्तरी अमेरिका), **अल्पाइन** (यूरोप), भारत के पश्चिमी और पूर्वी घाट आदि
- b. **अंतर्देशीय पर्वत**: मुख्य भूभाग पर; उदाहरण: **यूराल पर्वत** (रूस), **वोसगेस** और **ब्लैक फॉरेस्ट ब्लॉक पर्वत** (यूरोप), **हिमालय, अरावली, सतपुड़ा** आदि (भारत), **कुनलुन, तियान शान, अल्ताई** आदि (एशिया) आदि।

B. महासागरीय पर्वत

- ज्यादातर पानी की सतह के नीचे, कुछ ऊपर भी पाए जा सकते हैं।
- मुख्य रूप से महाद्वीपीय शेल्फ और समुद्र तल पर।
- उदाहरण: **हवाई द्वीप का मौना केआ ज्वालामुखी पर्वत, एंटिलियन पर्वत प्रणाली**

3. गठन के तरीके के आधार पर

A. सर्कम-इरोशनल या अवशिष्ट पर्वत:

- पुराने वलित पर्वतों के अवशेष
- गठन: अनाच्छादन का परिणाम
- जैसे: विंध्याचल पर्वतमाला, अरावली, सतपुड़ा, पूर्वी घाट, पश्चिमी घाट आदि .

B. मूल या विवर्तनिक पर्वत:

- निर्माण: **विवर्तनिक बलों के कारण**
- इन्हें आगे 4 प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है:

I. वलित पर्वत

- **निर्माण**: जब पृथ्वी की दो या दो से अधिक टेक्टोनिक प्लेटों को पृथ्वी के अंतर्जात बलों द्वारा उत्पन्न संपीड़न बलों द्वारा एक साथ धकेला जाता है
- **स्थान**: अभिसारी प्लेट सीमाएं
- **विशेषताएँ**:
 - सबसे छोटा पर्वत समूह।
 - जीवाश्म उपस्थित।
 - एक ओर अवतल ढाल तथा विपरीत दिशा में उत्तल ढाल।
 - भूकंप प्रवण
 - सर्वाधिक असंख्य और सर्वाधिक महत्वपूर्ण।

प्राचीन वलित पर्वत

- अनाच्छादन प्रक्रिया से अत्यधिक प्रभावित।
- जैसे: अरावली, विंध्याचल आदि

नवीन वलित पर्वत

- अनाच्छादन से सबसे कम प्रभावित
- जैसे: रॉकीज, एंडीज, आल्प्स, हिमालय आदि

वलित पर्वत के प्रकार

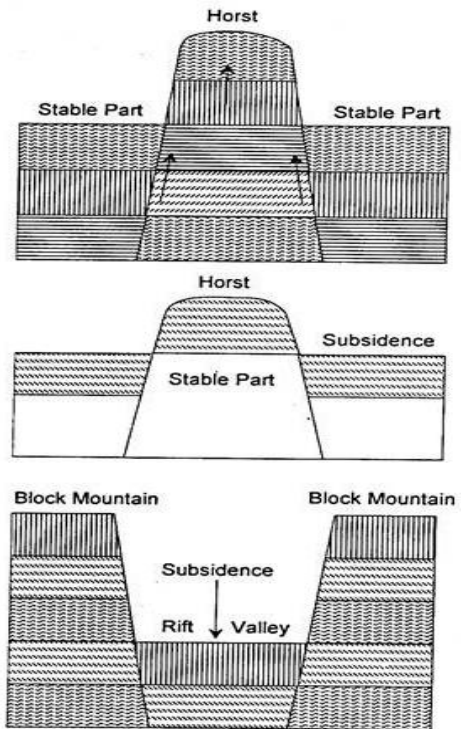
परिपक्व वलित पर्वत

- अनाच्छादन से प्रभावित।
- एकल कटक और घाटियां इनकी विशेषता

- प्रचुर मात्रा में खनिज संसाधन जैसे टिन, तांबा, सोना और अन्य धातुएं।
- **ज्वालामुखी गतिविधि का क्षेत्र**

II. ब्लॉक/फॉल्ट-ब्लॉक/होस्ट पर्वत

- **गठन:** अंतर्जात कारकों द्वारा तन्यता और संपीड़न बलों द्वारा।
- **स्थान:** दो भ्रंशों के बीच या दरार घाटी के दोनों ओर।
- **उदाहरण:** द वोसगेस पर्वत (फ्रांस में) और ब्लैक फॉरेस्ट (जर्मनी में) आदि।
- **विशेषताएं:**
 - यह तब बनता है जब **दो भ्रंश रेखाओं के बीच** की भूपर्पटी को ऊपर की ओर धकेला जाता है (दोनों ओर से क्षैतिज दबाव के कारण)।
 - **उदाहरण:** सतपुड़ा श्रेणी एक होस्ट पर्वत है और नर्मदा और तापी नदियाँ दोनों ओर भ्रंश घाटियों के साथ बहती हैं
 - यह तब उत्पन्न होता है जब पृथ्वी की पपड़ी का एक भाग **अपसारी दाबों के कारण** दो भ्रंश रेखाओं के साथ ढह जाता है।
 - **उदाहरण:** राइन नदी (जर्मनी) एक भ्रंश घाटी के साथ बहती है और ब्लैक फॉरेस्ट और वोसगेस इसके दोनों ओर ब्लॉक पहाड़ों या हॉस्ट का प्रतिनिधित्व करते हैं
 - खड़ी ढलानों और चपटा शिखर इसकी विशेषता है मध्यम आकार और लैक चोटियां



III. गुंबद(Dome) पर्वत

- **गठन:** मैग्मैटिक प्रवेश और क्रस्टल सतह के ऊपर की ओर।
- **स्थान:** समतल क्षेत्र में तलछटी चट्टानें एक संरचनात्मक गुंबद बनाकर ऊपर की ओर झुकी हुई या झुकी हुई होती हैं।
- जैसे: सामान्य गुंबद, लावा गुंबद, बाथोलिथिक गुंबद, लैकोलिथिक गुंबद, साल्ट गुंबद आदि.

IV. संचयी पर्वत / ज्वालामुखी पर्वत:

- **गठन:** ज्वालामुखी सामग्री के जमा होने के कारण।
- **उदाहरण:** सिंडर शंकु, मिश्रित शंकु, अम्ल लावा शंकु, मूल लावा शंकु आदि ।

महत्वपूर्ण पर्वत श्रृंखलाएं और चोटियां

पर्वत श्रृंखला	महत्वपूर्ण/उच्चतम चोटियाँ	स्थान	विवरण
रॉकी पर्वत	माउंट एल्वर्ट (रॉकीज की सबसे ऊंची चोटी)	उत्तरी अमेरिका	यह दुनिया के सबसे लंबे वलित पर्वतों में से एक है और कनाडा से पश्चिमी अमेरिका (न्यू मैक्सिको राज्य) तक फैला हुआ है।
अप्लेशियन पर्वत	माउंट मिशेल, उत्तरी कैरोलिना, यूएस (अप्लेशियन पर्वत की सबसे ऊंची चोटी)	उत्तरी अमेरिका	यह खनिज संसाधनों से भरपूर एक वलित पर्वत है
आल्पस	माउंट ब्लांक (फ्रांसीसी-इतालवी सीमा)	यूरोप	यह एक वलित पर्वत है और डेन्यूब, राइन आदि नदियों का स्रोत है।
सिएरा नेवादा	माउंट व्हिटनी	कैलिफोर्निया, यूएसए	कई रेड इंडियन्स का आवास
अलास्का रेंज	माउंट मैकिनले	उत्तरी अमेरिका	माउंट मैकिनले उत्तरी अमेरिका की सबसे ऊंची चोटी
अल्ताई पर्वत	बेलुखा पर्वत	मध्य एशिया	नवीन वलित पर्वत जो कजाकिस्तान से उत्तरी चीन तक फैला हुआ है।
एंडीज पर्वत	माउंट एकांकगुआ	दक्षिण अमेरिका	विश्व की सबसे लंबी पर्वत श्रृंखला
एटलस पर्वत	माउंट तूबक़ाल	उत्तर पश्चिमी अफ्रीका	मोरक्को और ट्यूनीशिया में फैले नवीन वलित पर्वत।
ड्रेकेन्सबर्ग पर्वत	माउंट लेसोथो	दक्षिण अफ्रीका	नवीन वलित पर्वत

काकेशस पर्वत	माउंट एल्ब्रुस	यूरोप	काला सागर और कैस्पियन सागर के बीच स्थित है
स्कैंडिनेवियाई पर्वत	गालद्होपिगेन	यूरोप (फिनलैंड, नॉर्वे, स्वीडन)	पहाड़ों के पश्चिमी किनारे उत्तरी सागर और नॉर्वेजियन सागर में तेजी से गिरते हैं, जिससे नॉर्वे के fjords बनते हैं, जबकि उत्तर-पूर्व में वे धीरे-धीरे फ़िनलैंड की ओर झुकते हैं।
कार्पेथियन पर्वत	गेल्राचोवस्की स्टिट	यूरोप	मध्य और पूर्वी यूरोप में एक चाप बनाने वाले पहाड़ों की श्रृंखला।
यूराल पर्वत	माउंट नरोदनया	रूस	यह पर्वत श्रृंखला यूरोप और एशिया के बीच एक सीमा के रूप में कार्य करती है।
हिंदुकुश पर्वत	माउंट ट्रिच मिर	पाकिस्तान और अफगानिस्तान	ऊबड़-खाबड़ स्थलाकृति के साथ वलित पर्वत जिसमें परिवहन कठिन है।
हिमालय	माऊन्ट एवरेस्ट	एशिया	एशिया में नवीन वलित पर्वत जो भारतीय उपमहाद्वीप को एशियाई मैदानों से अलग करते हैं
अराकान योमा	माउंट कैनेडी चोटी	म्यांमार	यह उत्तर से दक्षिण दिशा तक फैला हुआ है। इस क्षेत्र में स्थानांतरित खेती की जाती है।
कुनलुन पर्वत	माउंट मुज़्टाग	तिब्बती पठार के उत्तर और पश्चिमी चीन	यह नवीन वलित पर्वतों में से एक है।
वोसोस	माउंट ग्रैंड बैलोन	पूर्वी फ्रांस, यूरोप	अंगूर की खेती और मदिरा के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है।
ग्रेट डिवाइडिंग रेंज	माउंट कोसिउस्को	ऑस्ट्रेलिया	यह श्रेणी डार्लिंग और मरे नदियों का स्रोत है।

पठार (Plateaus)

- पठार (Plateaus) पठार शब्द फ्रांसिसी शब्द है जिसका अर्थ है सपाट शीर्ष। पठार की ऊँचाई 200 मी० होती है। आस पास की भूमि से ऊँचा भूखण्ड जिसका शिखर सपाट होता है, पठार कहलाता है। पठार में प्रायः एक ही ढाल होता है। ये ऊबड़ खाबड़ (Rough Cut) तथा असमान (Irregular) होते हैं। तिब्बत का पामीर पठार संसार का सबसे ऊँचा तथा विस्तृत पठार है।
- विश्व के 33% स्थलीय भाग पर पठार पाया जाता है।



पठार के प्रकार

(1) टेक्टोनिक पठार (Tectonic Plateaus)

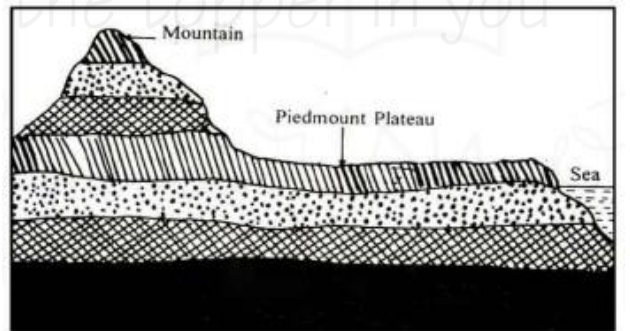
- जब कोई भूभाग भूगर्भ की शक्तियों के कारण आसपास के क्षेत्रों से ऊपर उठ जाता है तो इसे ही टेक्टोनिक पठार कहते हैं।
- जैसे - कोलेरेडो एवं कोलम्बिया का पठार।

(2) लावा पठार (Lava Plateaus)

- ज्वालामुखी के लावा के जमने से बना पठार लावा पठार कहलाता है।
- जैसे अमेरिका का कोलम्बिया पठार, महाराष्ट्र का पठार

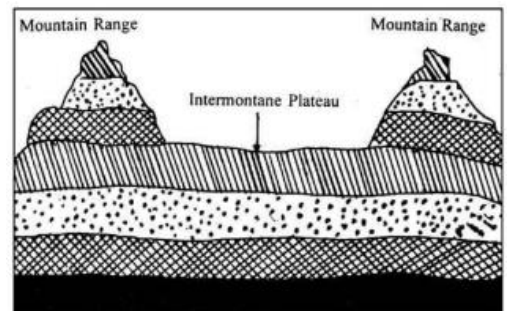
(3) पियामा पठार या गिरीपाद पठार (Piedmont Plateaus)

- पर्वतीय क्षेत्रों में पर्वतों के निर्माण के साथ बना पठार पियामा का पठार कहा जाता है, अर्थात् पर्वतीय नदियों के अपरदन या निक्षेप द्वारा पठार का निर्माण होता है।
- जैसे-अमेरिका का पिडमोन्ट पठार, दक्षिण अमेरिका में अर्जेन्टाइना का पेंटागोनिया पठार है।
- इन्हें गिरीपाद पठार भी कहते हैं।



(4) अन्तर्पर्वतीय पठार (Intermontane Plateaus)

- ये पठार पर्वतों के मध्य विकसित होते हैं।
- इनके किनारे पर ऊँची ऊँची पर्वत श्रेणियाँ होती हैं। जैसे हिमालय एवं क्युनलुन के बीच स्थित तिब्बत का पठार एवं पामीर का पठार।



(5) नदीकृत पठार (Riverine Plateaus)-

- नदियाँ अपने साथ अपरदित एवं प्रवाहित मलवा बहा लाती हैं और मैदानों में एकत्रित करती हैं इसी मलवे से निर्मित पठार को ही नदीकृत पठार कहते हैं।
- जैसे विन्ध्य पठार भारत में चेरापूँजी का पठार वर्मा का शान पठार

(6) हिमानीकृत पठार (Glaciated Plateaus)-

- हिमानियाँ प्रत्येक वर्ष पहाड़ी क्षेत्रों का धीरे धीरे अपरंदन करती रहती हैं।
- फलतः जो पठार बनता है उसे हिमानीकृत पठार कहते हैं।
- जैसे - उत्तरांचल का गढ़वाल पठार, ग्रीनलैण्ड पठार, अण्टार्कटिका पठार

(7) पवन निर्मित पठार (Aeolian Plateaus)-

- पवन द्वारा मरुस्थलों एवं अर्धमरुस्थलों से बालू एवं रेत के कणों को उड़ाकर किसी उपयुक्त स्थान पर जमा किया जाता है।
- इस प्रक्रिया द्वारा निर्मित पठार को ही पवन निर्मित पठार कहते हैं।
- जैसे- आस्ट्रेलिया का पश्चिमी पठार पाकिस्तान का पोतवार पठार चीन का लोयस पठार

विश्व के प्रमुख पठार

1. **ग्रीनलैंड का पठार** - अंध महासागर से उत्तरी भाग में लगभग 21,75,600 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में बर्फ से ढका विशाल पठार है इसे ग्रीनलैंड का पठार कहा जाता है।
2. **कोलंबिया का पठार** - संयुक्त राज्य अमेरिका के ऑर्गन वाशिंगटन और इडाहो राज्यों के मध्य 4,62,500 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत रूप में फैला है।
3. **मेक्सिको का पठार** - यह पठार पश्चिम सियारामार्दे और पूर्वी सियारामार्दे पर्वत श्रेणियों के मध्य स्थित है।
4. **तिब्बत का पठार** - यह हिमालय के उत्तर और क्यूनलुन पर्वत के दक्षिण में 4000 से 5000 मीटर तक की ऊंचाई पर स्थित है।
5. **मंगोलिया का पठार** - यह चीन के उत्तरी मध्य भाग में मंगोलिया किन राज्य में स्थित है।
6. **ब्राजील का पठार** - दक्षिण अमेरिका के मध्य पूर्वी भाग में यह पठार त्रिभुजाकार रूप में स्थित है।
7. **बोलीविया का पठार** - यह पठार 800 किलोमीटर लंबा और 128 किलोमीटर चौड़ा तथा इसकी औसत ऊंचाई 3110 मीटर है। यह बोलीविया के एंडीज पर्वतमाला क्षेत्र में विस्तृत रूप में फैला है।
8. **अलास्का का पठार** - इसका निर्माण यूकन और उसकी सहायक नदियों द्वारा हुआ है अतः इसे यूकन का पठार भी कहते हैं। कनाडा की ओर इसकी ऊंचाई लगभग 900 मीटर है
9. **ग्रेट बेसिन का पठार** - यह कोलंबिया पठार के दक्षिण में कोलोरेडो और कोलंबिया नदियों के मध्य 5,25,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है
10. **कोलोरेडो का पठार** - यह ग्रेट बेसिन के दक्षिण में स्थित है तथा इसका विस्तार यूटाह और एरीजोना राज्यों में पाया जाता है।
11. **दक्कन का पठार** - यह पठार दक्षिणी भारत में स्थित है इसे तीन ओर से पर्वत - श्रेणियों ने घेर रखा है। इसके पूर्व में पूर्वी घाट, पश्चिम में पश्चिमी घाट और उत्तर में विद्यांचल एवं सतपुड़ा की श्रेणियां हैं।
12. **ईरान का पठार** - इसे एशिया माइनर का पठार या ईरान का मध्यवर्ती पठार भी कहा जाता है। इसकी औसत ऊंचाई 900 से 1500 मीटर के मध्य है।
13. **अरब का पठार** - यह दक्षिणी पश्चिमी एशिया में स्थित है इसके पूर्व में फारस की खाड़ी, पश्चिम में लाल सागर, उत्तर-पश्चिम में भूमध्य सागर और दक्षिण में अरब सागर स्थित है।
14. **आनातोलिया का पठार** - यह टर्की के एंटीक एवं टारस श्रेणियों के मध्य स्थित है।
15. **अबीसीनिया का पठार** - यह पठार पूर्वी अफ्रीका के इथोपिया तथा सोमालिया के क्षेत्र में विस्तृत रूप में फैला है।
16. **मेडागास्कर का पठार** - मेडागास्कर द्वीप अफ्रीका के दक्षिण पूर्व हिंद महासागर में स्थित है इस द्वीप के मध्यवर्ती भाग पठारी है जिसे मेडागास्कर या मलागासी का पठार कहा जाता है।
17. **ऑस्ट्रेलिया का पठार** - ऑस्ट्रेलिया के पश्चिमी भाग में ऑस्ट्रेलिया का पठार स्थित है इसकी सामान्य ऊंचाई 180 से 600 मीटर के मध्य है। इस पठार का दक्षिणी भाग मरुस्थलीय है।
18. **चियापास का पठार** - यह दक्षिणी मैक्सिको में प्रशांत महासागर के तट पर स्थित है। इसके उत्तर में तबास्को, दक्षिण-पश्चिम में तेहुआनतेपेक की खाड़ी, पूर्व में ग्वाटेमाला और पश्चिम में ऑक्सका और बेराकूज़ स्थित है।
19. **मेसेटा का पठार** - स्पेन के आइबेरियन प्रायद्वीप पर मेसेटा का पठार स्थित है। इस पठार की औसत ऊंचाई 610 मीटर है।
20. **इंडो चीन का पठार** - यह दक्षिणी एशिया के पूर्वी प्रायद्वीप पर स्थित है। इस भाग पर साल्विन, सिकोंग, मीकोंग ।

मैदान

- एक नीची, अपेक्षाकृत समतल भूमि की सतह जिसमें कम स्थानीय उभार और बहुत हल्का ढलान है।
- ग्रह की सतह पर सबसे आम भू-आकृतियाँ।
- स्थिति: हर महाद्वीप पर।
- क्षेत्रफल: पृथ्वी की भूमि की सतह का > 55%।
- गठन: नदियों द्वारा नीचे ले जाए गए तलछट के निक्षेपण द्वारा।
- निर्माण में योगदान देने वाले कारक: नदियों के अलावा, हवा, गतिमान बर्फ, और विवर्तनिक गतिविधि सभी ने मैदानी इलाकों के निर्माण में योगदान दिया है।
- उदाहरण: इंडो गंगा के मैदान, मिसिसिपी के मैदान और यांग-त्ज़े मैदान



मैदानों का वर्गीकरण

• गठन के तरीके के आधार पर:

A. संरचनात्मक मैदान

- पृथ्वी की सतह पर अबाधित समतल भू-आकृतियाँ।
- संरचनात्मक रूप से अधोमुख क्षेत्र जो पृथ्वी पर सबसे अधिक विस्तृत प्राकृतिक तराई का निर्माण करते हैं।
- पृथ्वी की पर्पटी की गतियों से अपेक्षाकृत अप्रभावित क्षैतिज रूप से स्तरित चट्टानों से निर्मित।
- एक बड़े भूभाग के उत्थानकारी विनाशकारी हलचल द्वारा निर्मित।
- जैसे: रूसी प्लेटफार्म, ग्रेट प्लेन (USA) और सेंट्रल तराई (ऑस्ट्रेलिया)।

B. अपरदनात्मक मैदान (पेनेप्लेन्स)

- मौजूदा भू-आकृतियों पर अनाच्छादन (नदी, बहता पानी, हिमनद और हवा) के विभिन्न एजेंटों की कार्रवाई से उत्पन्न मैदानी भू-आकृतियाँ।
- एजेंट मौजूदा लैंडफॉर्म पर ऊबड़-खाबड़ सतह को घिस देते हैं और उन्हें चिकना कर देते हैं - कम लहरदार प्लेन लैंडफॉर्म।
- **प्रमुख प्रकार:**
 - **पेनेप्लेन्स (लगभग समतल):** वायु के अतिरिक्त ऊपर उल्लिखित विभिन्न एजेंटों की कार्रवाई के परिणामस्वरूप।
 - **पेडिप्लेन्स या पेडिमेंट्स:** शुष्क और अर्ध-शुष्क स्थानों में यांत्रिक अपक्षय द्वारा पर्वतीय ढलानों को एक कोमल ढलान को छोड़ दिया जाता है।
 - **मरुस्थलीय मैदान:** पवन अपरदन द्वारा निर्मित। उदाहरण: सहारा में रेग, सेरीर और हमादा।
 - **कार्स्ट मैदान:** बड़े पैमाने पर चूना पत्थर के पठार रासायनिक अपक्षय और भूजल द्वारा क्षरण के प्रति संवेदनशील होते हैं, जो अंततः कम उभार के साथ एक अधोमुख स्थलाकृतिक सतह में बदल जाते हैं। उदाहरण: कनाडाई ढाल और पश्चिम साइबेरियाई मैदान।

C. निक्षेपात्मक मैदान

- **गठन:** कई भू-आकृति प्रक्रियाओं की निक्षेपण क्रिया के कारण।
 - नदी या जलोढ़ मैदान: नदी निक्षेपों द्वारा निर्मित मैदान।
 - झील के मैदान या झील के मैदान: एक झील में तलछट के जमाव से। जैसे: कश्मीर घाटी।
 - हिमनद या बहाव के मैदान: हिमनदों के निक्षेपों द्वारा निर्मित।
 - लोएस मैदान: जब हवा प्राथमिक जमाव तंत्र है।
- **विशेषता:** दुनिया के सबसे अधिक उत्पादक कृषि मैदान।
- **उदाहरण:** गंगा का मैदान (चावल और जूट के लिए), मिस्र का नील डेल्टा (चावल और कपास के लिए) और चीन में ह्वांग हो मैदान
- **प्रकार**

1. जलोढ़ मैदान:

- मैदानी भूमि के विशाल, व्यापक खंड जो जलोढ़ कहलाने वाले तलछट के जमाव से बनते हैं।
- भूगर्भीय समय के साथ बाढ़ के मैदान में बदलाव के पैटर्न को दर्शाता है।
- नदी पहाड़ों या पहाड़ियों से नीचे बहती है - कटाव के परिणामस्वरूप तलछट ले जाती है और तलछट को निचले मैदान में जमा करती है।
- समय के साथ तलछट का निर्माण होता है- बाढ़ के मैदान की ऊंचाई बढ़ जाती है और नदी चैनल की चौड़ाई कम हो जाती है।

2. बाढ़ का मैदान

- मैदान जो किसी नदी या नाले के किनारे से घिरी घाटी की दीवारों तक फैला है।

- आमतौर पर बाढ़ से प्रभावित होता है जब आसन्न जल निकाय ओवरफ्लो हो जाता है।
- उपजाऊ और बाढ़ के पानी द्वारा जमा किए गए सिल्ट, रेत, लीव आदि के जमा से बने होते हैं।
- आमतौर पर एक समृद्ध पारिस्थितिकी तंत्र का समर्थन करते हैं।
- इतिहास में सबसे विनाशकारी बाढ़ यहाँ हुई है।
- उदा. पीली नदी के बाढ़ के मैदान।

3. स्कॉल मैदान

- वहाँ बनता है जहाँ एक नदी कम ढाल के पार जाती है।
- ऐसे स्थानों पर तलछट का जमाव - मैदानों का निर्माण।
- ऑक्सबो झीलें ऐसे क्षेत्रों में सामान्य घटनाएँ हैं।
- उदा. टेरी नदी

4. लैकुस्ट्रिन मैदान

- उन क्षेत्रों में गठित जहाँ पहले झीले थीं।
- जब एक झील पूरी तरह से सूख जाती है, तो बचा हुआ तलछट झील के तल पर एक मैदान बनाता है।
- अत्यधिक उपजाऊ हो सकता है और कृषि का समर्थन कर सकता है या तलछट की संरचना के आधार पर आर्द्रभूमि या रेगिस्तान भी बना सकता है।
- अमेरिका के दक्षिणी इंडियाना में सामान्य रूप से मिलता है।
- उदा. भारत की कश्मीर घाटी

5. लावा मैदान

- लावा की परतों के जमा होने से बनता है।
- मीलों तक विस्तारित और आकाश से या उपग्रह से लिए गए चित्रों में आसानी से दिखाई देता है - आसपास के परिदृश्य की तुलना में गहरे रंग में दिखाई देता है

D. हिमनद के मैदान

- गुरुत्वाकर्षण बल के तहत ग्लेशियरों की गति से निर्मित।
- **वर्गीकरण:**
 - **आउटवाश मैदान/संदूर :**
 - ✓ यह तब बनता है जब कोई ग्लेशियर अपने टर्मिनस पर तलछट जमा करता है।
 - ✓ जैसे-जैसे हिमनद गति करता है, यह आधारशिला को मिटाता है और अपरदित अवसादों को नीचे की ओर ले जाता है।
 - ✓ ये तलछट किनारों पर ग्लेशियर के पिघले पानी द्वारा जमा की जाती हैं।
 - ✓ आइसलैंड में सामान्य रूप से पाई जाने वाली भू-आकृति।
 - ✓ विश्व का सबसे बड़ा बहिर्गमन मैदान- आइसलैंड में स्कीयरारसंदूर - **1,300** वर्ग किमी।
 - **टिल मैदान**
 - ✓ हिमनदों के निक्षेपण (बिना छंटे हिमनद तलछट) द्वारा निर्मित।
 - ✓ जब हिमनदों की बर्फ की चादर मुख्य हिमनद से अलग हो जाती है और अपने स्थान पर पिघल जाती है, तो तलछट जमीन पर जमा हो जाती है, जिसके परिणामस्वरूप एक समतल मैदान बनता है।
 - ✓ उत्तरी ओहियो में देखा जा सकता है जहाँ वे विस्कॉन्सिन हिमनद द्वारा बनाए गए थे।

E. अबेसल मैदान

- बड़ी गहराई पर स्थित - **9,800** फीट और **20,000** फीट के बीच।
- हमारे ग्रह की पृथ्वी की सतह का ~ **50%** भाग।
- विश्व के सबसे कम खोजे गए क्षेत्रों के साथ-साथ सबसे समतल और चिकने क्षेत्र।
- आकार में विशाल।
- उदा. उत्तरी अटलांटिक महासागर का सोहम मैदान - **900,000** वर्ग किमी। अटलांटिक महासागर में सबसे सामान्य रूप से मिलने वाला लेकिन प्रशांत महासागर में काफी दुर्लभ है।
- अबेसल अवसादों में भूमि से प्राप्त तलछटों के जमाव से बनते हैं।

विश्व के प्रमुख मैदान

1. **भारत का भारत-गंगा का मैदान**
 - हिमालय के दक्षिण में सुलेमान पहाड़ों से लेकर गार्गो और लुशाई पहाड़ियों तक फैला हुआ है।
 - ~ 100 से 300 मील चौड़ा।
 - गहरी और उपजाऊ मिट्टी के साथ समतल और जलोढ़ मैदान।
 - दुनिया के सबसे घनी आबादी वाले हिस्सों में से एक।
2. **लानोस (दक्षिण अमेरिका)**
 - ओरिनोको बेसिन के विशाल मैदान।
 - शुष्क मौसम - मरुस्थल
 - वर्षा का मौसम - घास की बहुतायत।
3. **लोम्बार्डी मैदान**
 - इटली के अधिकांश उपजाऊ भागों को पो नदी द्वारा सींचा जाता है।
 - प्रमुख गतिविधियाँ- मकई, फल और शहतूत के पौधे जिन पर रेशम के कीड़ों को पाला जाता है।
4. **पम्पास (दक्षिण अमेरिका)**
 - ला प्लाटा नदी प्रणाली के चौड़े, वृक्षरहित, घास से ढके मैदान।
 - विश्व में सर्वाधिक विस्तृत चारागाह भूमि।

5. सेल्वास

- अमेज़न घाटी के विशाल अभेद्य वन।
- अत्यधिक गर्मी और भारी वर्षा का क्षेत्र।
- विश्व का सबसे बड़ा जंगल



6. स्टेपीज़

- रूस के विशाल वृक्षविहीन मैदान कैस्पियन सागर से पूर्व की ओर फैले हुए हैं।
- गर्मियों में बहुत गर्म और सर्दियों में बहुत ठंड होती है और वर्षा नहीं होती है।

7. डुङ्गा

- अमेरिका, एशिया और यूरोप के चरम उत्तर में ध्रुवों के पास दलदली मैदान।
- लगभग नौ महीने तक जमे हुए रहते हैं।
- प्रमुख गतिविधियाँ- मछली पकड़ना और शिकार करना।

अन्य महत्वपूर्ण मैदान- दक्षिण अफ्रीका में वेल्ड, ऑस्ट्रेलिया में डाउन्स, उत्तरी अमेरिका में प्रेयरी, उत्तरी अफ्रीका में सवाना और पूर्वी अफ्रीका में पार्कलैंड।

विश्व की प्रमुख नदियाँ

नदी	स्थान	विवरण
अमेज़न नदी	दक्षिण अमेरिका	यह दूसरी सबसे लंबी नदी है जो पेरू, कोलंबिया और ब्राजील से होकर बहती है और अटलांटिक महासागर में गिरती है।
मिसिसिप्पी नदी	उत्तरी अमेरिका	यह मेक्सिको की खाड़ी में एक डेल्टा की तरह एक पक्षी-पंजाकार बनाती है, मिसौरी नदी इसकी एक महत्वपूर्ण सहायक नदी है।
सेंट लॉरेंस नदी	उत्तरी अमेरिका	यह सेंट लॉरेंस की खाड़ी में गिरती है जो उत्तरी अमेरिका का एक महत्वपूर्ण परिवहन गलियारा है।
ऑरेंज नदी	दक्षिण अफ्रीका	दक्षिण अफ्रीका की सबसे लंबी नदी और इसके मुख के साथ हीरे के स्रोत हैं।
कांगो नदी	अफ्रीका	यह नदी भूमध्य रेखा को दो बार काटती है और दक्षिण अटलांटिक महासागर में गिरती है।
नील नदी	अफ्रीका	यह दुनिया की सबसे लंबी नदी है, विक्टोरिया झील के पास से निकलती है, और भूमध्य सागर में गिरती है।
राइन नदी	पश्चिमी यूरोप	यह जर्मनी और नीदरलैंड से होकर बहती है। यह यूरोप के सबसे व्यस्त जलमार्गों में से एक है।
डेन्यूब नदी	यूरोप	यह जर्मनी, हंगरी, ऑस्ट्रिया, स्लोवाकिया, सर्बिया, रोमानिया से होते हुए काला सागर में गिरती है।
वोल्गा नदी	यूरोप, रूस	यह यूरोप की सबसे लंबी नदी है, यह कैस्पियन सागर में गिरती है।
टिगरिस नदी	तुर्की, इराक	मोसुल, बगदाद, बसरा जैसे शहर इसके किनारे स्थित हैं और यह फारस की खाड़ी में गिरती है।
फरात नदी	तुर्की, सीरिया, इराक	सीरिया के लिए पानी का मुख्य स्रोत। यह फारस की खाड़ी में गिरती है।
इरावदी नदी	म्यांमार	मर्तबान की खाड़ी में गिरती हैं

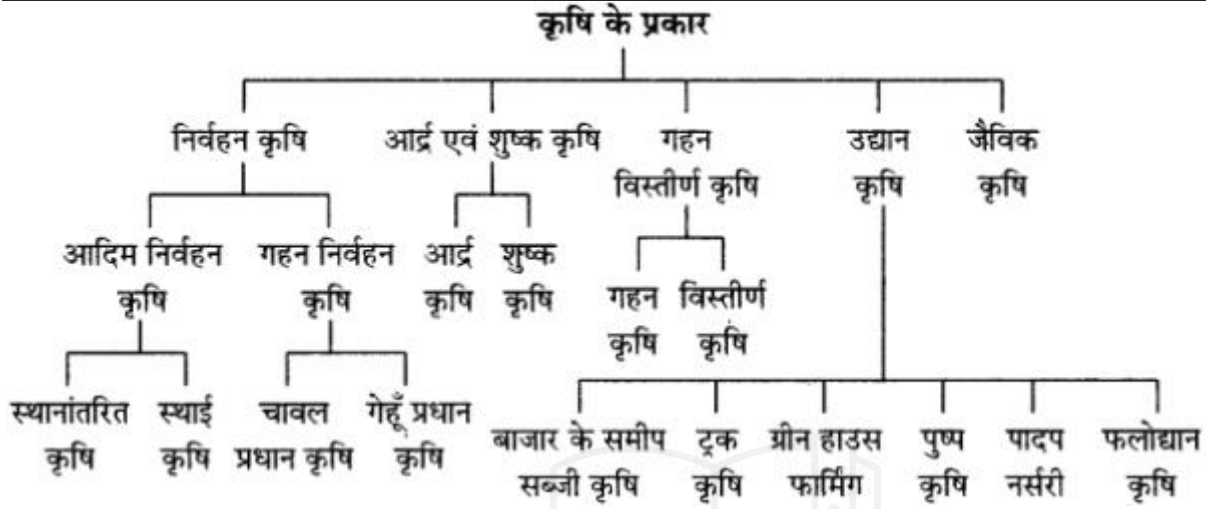
मेकोंग नदी	चीन, लाओस, कंबोडिया, वियतनाम	इसे 'पूर्व का डेन्यूब' भी कहा जाता है और यह दक्षिण चीन सागर में मिल जाता है।
यांग्ज़ी नदी	चीन	यह तिब्बती पठार से निकलती है और पूर्वी चीन सागर में गिरती है। यह चीन की सबसे लंबी नदी है।

विश्व की महत्वपूर्ण झीलें

नाम	स्थान	तथ्य
टिटिकाका झील	दक्षिण अमेरिका	यह एंडीज पहाड़ों में स्थित दुनिया की सबसे ऊंची नौगम्य झील है।
ग्रेट बियर लेक	कनाडा, उत्तरी अमेरिका	यह कनाडा की एक बड़ी हिमाच्छादित झील है। कनाडा के एस्किमो गर्मी के मौसम में यहां डेरा डालते हैं।
ग्रेट लेक्स	उत्तरी अमेरिका	इसमें उत्तरी अमेरिका की पांच बड़ी झीलें शामिल हैं जैसे लेक सुपीरियर, मिशिगन, ह्यूरन, एरी, ऑंटारियो। सुपीरियर झील विश्व की दूसरी सबसे बड़ी झील है।
मलावी झील	मध्य अफ्रीका	यह अफ्रीका की तीसरी सबसे बड़ी झील है और तंजानिया, मोजाम्बिक से लगती है।
तांगानिका झील	पूर्वी अफ्रीका	यह अफ्रीका की सबसे गहरी और दूसरी सबसे बड़ी झील है।
विक्टोरिया झील	अफ्रीका	अफ्रीका की सबसे बड़ी नदी और भूमध्य रेखा से होकर गुजरती है।
कैजी झील	अफ्रीका	अफ्रीका की सबसे बड़ी मानव निर्मित झील, जिसका उपयोग सिंचाई के लिए किया जाता है।
मृत सागर	पश्चिम एशिया	इसकी सीमा पूर्व में जॉर्डन और पश्चिम में फिलिस्तीन, इज़राइल से लगती है। यह उच्च लवणता के लिए जानी जाती है।
अराल सागर	मध्य एशिया	उज्बेकिस्तान और कजाकिस्तान के बीच स्थित है। हाल के वर्षों में यह तेजी से सिकुड़ रही है।
बैकल झील	रूस	यह एशिया की सबसे बड़ी ताजे पानी की झील है और दुनिया में सबसे गहरी है।
कैस्पियन सागर	यूरोशिया	यह दुनिया की सबसे बड़ी झील है और रूस, कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, ईरान और अजरबैजान से घिरी हुई है।



कृषि के प्रकार



आदिम निर्वाह कृषि

- एक प्राचीन प्रकार की कृषि पद्धति।
- एक विशेष या परिभाषित स्थान में की जाती है जिसमें किसान अपनी फसल उगाते हैं।
- किसान अपनी जरूरतों के लिए भोजन का उत्पादन करते हैं न कि बिक्री के लिए।
- भारत - केरल, तटीय आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल।
- विश्व-अमेज़न बेसिन, उष्णकटिबंधीय अफ्रीका,



लाभ	नुकसान
<ul style="list-style-type: none"> • लागत प्रभावी। • टिकाऊ • प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल • न्यूनतम प्रदूषण और पर्यावरण प्रदूषण 	<ul style="list-style-type: none"> • मानसून पर निर्भर करता है। • मोनोकल्चर के कारण मिट्टी की उर्वरता नष्ट होती है • झाड़ी जलाने से पौधे और जानवर नष्ट हो जाते हैं • कम उत्पादन के कारण गरीबी और कम आर्थिक विकास होता है • वनों की कटाई के कारण पर्यावरणीय विनाश की ओर अग्रसर

वाणिज्यिक कृषि

- वाणिज्यिक बाजार में बेचने के लिए खेती और पशुपालन करना।
- भारत में महाराष्ट्र, तमिलनाडु, पंजाब, हरियाणा और गुजरात।
- विश्व में उत्तरी अमेरिका, यूरोप और एशिया के समशीतोष्ण घास के मैदान



लाभ	नुकसान
<ul style="list-style-type: none"> • स्थानीय अवसंरचना में सुधार। • रोजगार सृजन • कीमत में कमी • बढ़ी हुई खाद्य सुरक्षा • उत्पादन की लागत कम हुई है। • निर्यात के कारण विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि। 	<ul style="list-style-type: none"> • भूमि की कमी। • भूमि को खेती योग्य बनाने के लिए प्राकृतिक वनों का विनाश • जल्दी खराब होने के लिए अधिक पूंजी की आवश्यकता • कृषि रसायनों का अत्यधिक उपयोग -पर्यावरण

शुष्क भूमि की खेती

- मिट्टी की अधिकतम नमी का उपयोग होता है
- पानी की अतिरिक्त आपूर्ति की आवश्यकता नहीं है।
- भारत में - गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और राजस्थान।
- विश्व-पूर्वी वाशिंगटन, और उत्तरी अमेरिका, मध्य पूर्व के अन्य शुष्क क्षेत्रों, और अन्य अनाज उगाने वाले क्षेत्रों जैसे यूरेशिया और अर्जेंटीना के मैदानों में।



लाभ	नुक्सान
<ul style="list-style-type: none"> • कृषि के बड़े हिस्से का उपयोग हो जाता है • भारत में पोषण खाद्य सुरक्षा की पूर्ति हो जाती है • सूखा प्रभावित क्षेत्रों और मरुस्थलीय क्षेत्रों में अधिक उपयोगी है • मृदा कार्बनिक पदार्थ में वृद्धि होती है। • दीर्घकालिक खाद्य सुरक्षा और उत्पादकता संभव हो पाती है। 	<ul style="list-style-type: none"> • कम और अनिश्चित वर्षा के कारण कई बार फसलों का भारी नुक्सान होता है • किसानों को ऋण के जाल में फंसकर आत्महत्या कर लेते हैं • बड़ी परिपक्वता अवधि वाली फसलें नहीं होती हैं • जलवायु परिवर्तन फसल वृद्धि को प्रभावित करता है

तर कृषि

- आम तौर पर बारिश पर निर्भर करता है।
- तर कृषि एक प्रकार की खेती है, जो सामान्यतः कॉप मिट्टी (जलोढ़ मिट्टी) के उन क्षेत्रों में की जाती है, जहां पर वर्षा की मात्रा लगभग 200 सेमी से अधिक होती है।
- भारत में अधिक वर्षा वाली खेती को मध्य व पूर्वी हिमालय, असम, मेघालय, पश्चिम बंगाल, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा और पश्चिमी समुद्र तटीय मैदानों में होती है, क्योंकि इन क्षेत्रों में फसलों की सिंचाई करनी की जरूरत नहीं होती है और साल में एक से अधिक बार खेत से किसान फसल उत्पादन कर सकता है जिससे किसान को अधिक मुनाफा होता है।
- तर की खेती में मुख्यतः चावल और जूट की फसल है।



लाभ	नुक्सान
<ul style="list-style-type: none"> • पैदावार तीन गुना बढ़ जाती है; • एकाधिक फसल; • लाभ कमाने के लिए शहरों में बेचने के लिए अधिशेष; • जीवन स्तर में सुधार; • उर्वरक, मशीनरी की खरीद की अनुमति देता है। 	<ul style="list-style-type: none"> • गरीब किसान HYV, उर्वरक और मशीनरी का खर्च नहीं उठा सकते हैं; • किसान कर्ज के जाल में फंस जाते हैं • अधिक पानी और उर्वरक की आवश्यकता - महंगा। • अत्यधिक कृषि रसायनों के कारण सुपोषण

स्थानीय नाम	क्षेत्र
रे	वियतनाम
तावी	मेडागास्कर
मसोले	कांगो (ज़ैर नदी घाटी)
फंग	भूमध्यरेखीय अफ्रीकी देश
लोगन	पश्चिमी अफ्रीका
कोमील	मेक्सिको
मिल्या	युकाटन और ग्वाटेमाला
एकालिन	ग्वाडेलोप
मिल्या	मेक्सिको और मध्य अमेरिका
कोनुको	वेनेजुएला
रोका	ब्राज़ील
चेतेमिनी	युगांडा, ज़ाम्बिया और जिम्बाब्वे
कईगिन	फिलीपींस
तौन्य	म्यांमार
चेना	श्रीलंका
लादांग	जावा और इंडोनेशिया
तमराइ	थाईलैंड
हुमाह	जावा और इंडोनेशिया

झूम खेती या स्थानान्तरणशील कृषि (Shifting Cultivation) :

- स्थानान्तरण कृषि या झूम कृषि (slash and burn farming) एक आदिम प्रकार की कृषि है जिसमें पहले वृक्षों तथा वनस्पतियों को काटकर उन्हें जला दिया जाता है और साफ की गई भूमि को पुराने उपकरणों लकड़ी के हलों आदि से जुताई करके बीज बो दिये जाते हैं।
- जब तक मिट्टी में उर्वरता विद्यमान रहती है इस भूमि पर खेती की जाती है। इसके पश्चात् इस भूमि को छोड़ दिया जाता है जिस पर पुनः पेड़-पौधें उग आते हैं।
- मक्का, ज्वार, बाजरा, धान वकेला इसकी प्रमुख खाद्य फसलें हैं। किसान वनों साफ करके खेत बनाते हैं और बाद उस स्थान को छोड़कर दूसरी जगह यही हैं। इसमें कृषि उपज बहुत कम होती अतः किसान आखेट, वन संग्रहण आदि माध्यम से जीवन-यापन है।
- दो-तीन वर्ष खेती करने बाद उसकी उर्वरा शक्ति समाप्त होने के कारण दूसरे स्थान ढूंढना पड़ता इससे उर्वरा शक्ति है।
- यह एक प्रकार की ढलान पर की जाने वाली खेती है। इसमें किसी भाग पर उगे हुए पेड़ों (अधिकांशतः केवल शाखाएँ) को खाद के लिए जला दिया जाता है। इस जमीन पर दो तीन साल खेती की जाती है। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में झूम खेती कहते हैं। दक्षिणी उड़ीसा और ज्यादातर दक्षिण भारत में उसे पोड़ू कहते हैं। भारत की जनजातियों के लगभग 25 प्रतिशत लोग ऐसी खेती करते हैं।



भारत में झूम कृषि के स्थानीय नाम	
झूम	उत्तर-पूर्वी भारत
वेवर और दहियार	बुंदेलखंड क्षेत्र (मध्य प्रदेश)
दीपा	बस्तर जिला (मध्य प्रदेश)
जरा और एरका	दक्षिणी राज्य
बत्रा	दक्षिण-पूर्वी राजस्थान
पोड़ू	आंध्र प्रदेश
कुमारी	केरल के पश्चिमी घाट के पहाड़ी क्षेत्र
कमन, वींगा और धावी	ओडिशा

लाभ	नुक्सान
<ul style="list-style-type: none"> • पारंपरिक कृषि पद्धति जहां भूमि के एक भूखंड को साफ, जलाया और सुसंस्कृत किया जाता है। • भूमि और कृषि के लिए बहुत ही आसान और तेज तैयारी विधि। 	<ul style="list-style-type: none"> • कई पेड़ काटे जाते हैं। • मिट्टी की उर्वरता में कमी के कारण मिट्टी का क्षरण होता है।

बागाती/बागानी/रोपण कृषि

- बड़े-बड़े बागानों के रूप में की जाने वाली कृषि जिसमें एक बार वृक्षों के बागान लगा दिये जाते हैं और कुछ समय पश्चात् से कई वर्षों तक उनसे उत्पादन प्राप्त होता रहता है।
- यह मुख्यतः व्यापारिक कृषि है जो उष्ण कटिबंध के विशिष्ट प्रदेशों में की जाती है।
- **विशेषता**
 - बागाती कृषि के अंतर्गत किसी एक नकदी फसल का उत्पादन कारखाने की भांति प्रायः बड़े पैमाने पर किया जाता है।
 - इसके अंतर्गत चाय, कहवा, रबड़, कोको, नारियल, मिर्च-मसाले, केला आदि उत्पन्न किये जाते हैं।
 - बागाती कृषि के प्रधान क्षेत्र दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया, मध्य अफ्रीका तथा लैटिन अमेरिका के उष्णार्द्र प्रदेश हैं।
 - बागानों के लगाने तथा देख-भाल के लिए प्रायः अधिक पूँजी निवेश की आवश्यकता होती है, अतः अधिकांश बागान विदेशी आधिपत्य में हैं।
 - इसमें उन्नत वैज्ञानिक विधियों, आधुनिक कृषि यंत्रों, उन्नत बीजों, कीटनाशकों, मशीनों आदि का प्रयोग किया जाता है।



गहन जीविका कृषि

- इस प्रकार की कृषि प्रणाली में, फसलों को मुख्य रूप से स्थानीय खपत के लिए उत्पादित जाता है। यदि कोई अधिशेष है, तो यह बाजार में बेचा जाता है। एशिया के घनी आबादी वाले क्षेत्रों जहां की जलवायु मानसून वाली होती है, इस प्रकार की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है।
- यह दो तरह के होते हैं: पहला धान की खेती और दूसरा ज्वार, सोयाबीन, गन्ना, मक्का और सब्जियों जैसे फसलों का प्रभुत्व है। टोनकिंग डेल्टा (वियतनाम), निचले मेनम (थाईलैंड); निचला इरावदी (म्यांमार); और गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा, पूर्वी तटीय मैदान (भारत) क्षेत्रों में इस प्रकार की कृषि प्रणाली बहुत प्रचलित है।



मिश्रित कृषि

- इस तरह के कृषि प्रणाली, विश्व के उन क्षेत्रों किये जाते हैं जो अत्यधिक विकसित हैं और समशीतोष्ण अक्षांश पर स्थित हैं जैसे उत्तर-पश्चिमी यूरोप, पूर्वी उत्तरी अमेरिका, रूस, यूक्रेन, और दक्षिणी महाद्वीप। इस प्रकार की कृषि बहुत गहन है और अत्यधिक विशिष्ट होती है।



खड़ी खेती (Vertical Farming)

- सामान्य रूप से खुली जगह तथा इमारतों व अपार्टमेंट की दीवारों का उपयोग कर छोटी – मोटी फसल को उगाने में किया जाता है।
- यह एक तरह की मल्टी लेवल पद्धति है।
- इस तरह की खेती में एक कमरे में बहु-सतही ढांचा खड़ा किया जाता है।
- इस ढाँचे के निचले हिस्से में पानी से भरा टैंक होता है।
- टैंक की ऊपरी सतह में पौधों के छोटे-छोटे गमले रखे जाते हैं।
- पम्प का उपयोग कर पोषक तत्व युक्त पानी को धीरे – धीरे इन पौधों तक पहुंचाया जाता है। इससे पौधों में तेजी से वृद्धि होती है।
- प्रकाश उत्पन्न करने के लिए LED बल्बों का इस्तेमाल किया जाता है।



भारत में आधुनिक कृषि के तरीके

हाइड्रोपोनिक्स

- बिना मिट्टी की खेती -इसके लिए किसी भी प्रकार की मिट्टी की आवश्यकता नहीं होती है।
- तापमान और पीएच संतुलन जैसी पर्यावरणीय स्थितियों में नियंत्रण रखकर खेती की जाती है
- पोषक तत्वों और पानी के लिए अधिकतम जोखिम।
- विशेष रूप से उगाए जा रहे पौधे की जरूरतों के अनुरूप पोषक तत्वों के समाधान का प्रबंध करता है।
- हाइड्रोक्लचर का सबसेट, और हाइड्रोपोनिक फार्मिंग सिस्टम में उपयोग किए जाने वाले पोषक तत्व अलग-अलग होते हैं



एरोपोनिक्स सिस्टम

- पौधे मिट्टी के उपयोग के बिना हवा या धुंध के वातावरण में उगाए जाते हैं।
- हाइड्रोपोनिक्स का सबसेट और पौधे की जड़ को हवा में काम करने के लिए निलंबित कर देता है।
- किसानों को एक के अंदर आर्द्रता, तापमान, पीएच स्तर और जल चालकता को नियंत्रित करने में सक्षम बनाता है

प्रमुख फसलें

- फसल-पौधे के उत्पाद जिसे लाभ या निर्वाह के लिए उगाया और काटा जा सकता है।
- खाद्य फसलें, जैसे फल और सब्जियां, मानव उपभोग के लिए काटी जाती हैं।
- अनाज, जैसे मक्का, गेहूं और चावल दुनिया की सबसे लोकप्रिय खाद्य फसलें हैं।
- खाद्य फसलें कृषि के माध्यम से काटी जाने वाली पहली फसल थीं।



अनाज की फसलें

- दुनिया भर में किसी भी अन्य प्रकार की फसल की तुलना में अधिक मात्रा में उगाया जाता है
- किसी भी अन्य फसल की तुलना में मानव जाति को अधिक खाद्य ऊर्जा प्रदान करते हैं
- गेहूं और चावल (दुनिया भर में सबसे महत्वपूर्ण फसलें हैं) दुनिया के %50 से अधिक अनाज उत्पादन।

रेशे वाली फसलें

- कपड़ा, डोरी जैसे, रस्सियाँ के लिए रेशे के उत्पादन के लिए उगाया जाता है।
- जैसे :कपास, जूट, केनाफ, सन भांग, और सन आदि।

तेल फसलें

- खाना पकाने में उपयोग के लिए इनकी खेती की जाती है है, जैसे जैतून का तेल और मकई का तेल।
- औद्योगिक उपयोग के लिए भी काटा जाता है, जैसे तेल पेंट, साबुन, और मशीनरी के लिए स्नेहन।
- जैव ईंधन -तेल फसलों से बना ईंधन।

नकदी फसलें

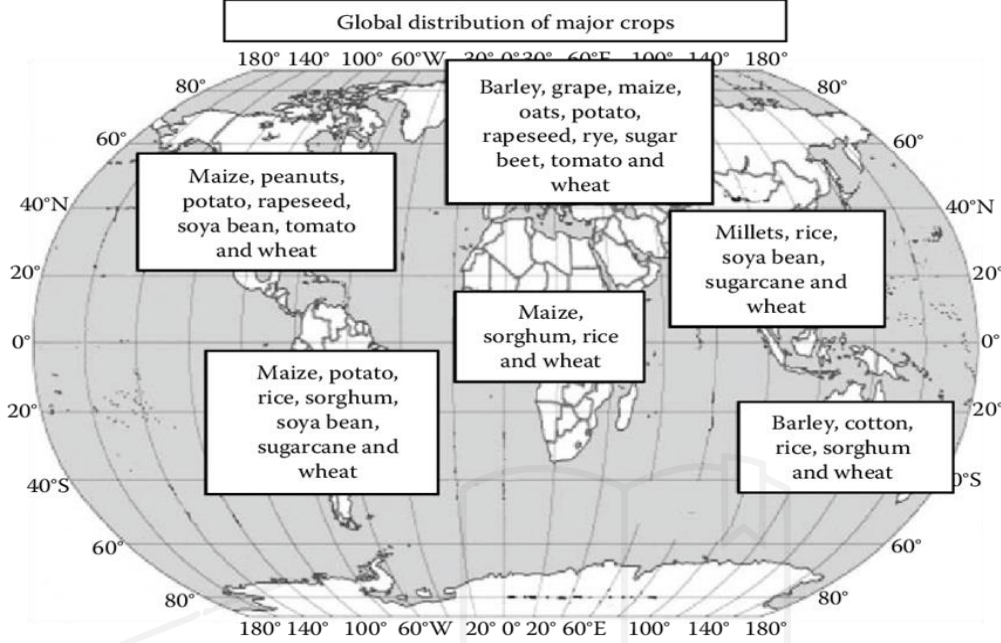
- लाभ कमाने के लिए बाजार में बेचने या निर्यात के उद्देश्य से लगाया जाता है।
- उदा .काँफी, कोको, चाय, गन्ना, कपास, और मसाले।

पेय फसलें

- इनमे स्टार्च और चीनी शामिल हैं, जिनका उपयोग पेय पदार्थ बनाने में किया जाता है।

- चाय भारत में महत्वपूर्ण पेय फसल है।
- पेय फसलों के प्रमुख उदाहरण जौ-, चावल, नारियल, अंगूर,, मक्का, गन्ना, मक्का, कॉफी, चाय, लेमनग्रास, कोको, अनाज, नींबू, सेब।
- अनेक पेय पदार्थों के लिए उपयोग किया जाता है जैसे बीयर, शर्बत बीयर, पाम वाइन, अंगूर वाइन, शराब, चाय, कॉफी, साइडर, कॉर्न सिरप, नींबू पानी और टकीला

प्रमुख फसलों का वैश्विक वितरण



गेहूँ - चीन, भारत, रूस, अमेरिका, फ्रांस

चावल - चीन, भारत, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, वियतनाम

मक्का - संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, ब्राजील और अर्जेंटीना

बाजरा - भारत, नाइजर, चीन, नाइजीरिया, माली

जौ - यूरोपीय संघ, रूस, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, तुर्की

ज्वार - संयुक्त राज्य अमेरिका, नाइजीरिया, इथियोपिया, सूडान, मेक्सिको।

सोयाबीन - ब्राजील, अमेरिका, अर्जेंटीना, चीन, भारत

गन्ना - ब्राजील, भारत, चीन, थाईलैंड, अमेरिका

कपास - भारत, चीन, अमेरिका, पाकिस्तान, ब्राजील

पशुपालन

- यह मुख्य रूप से व्यापक समशीतोष्ण घास के मैदानों में प्रचलित है लेकिन कुछ हद तक यह उष्णकटिबंधीय सवाना घास के मैदान जैसे कैम्पोस और लिअनोस में भी प्रचलित है। स्थायी खेतों में, बड़ी संख्या में मवेशी, भेड़, बकरियों और घोड़ों को रखा जाता है। इन्हें घरेलू बाजार और निर्यात दोनों के लिए मांस और ऊन का उत्पादन करने के लिए उपयोग किया जाता है ताकि इन्हें घरेलू बाजार में बेचा जा सके तथा निर्यात किया जा सके।



किसान की अर्थव्यवस्था में पशुधन का योगदान

आय -: भारत में कई परिवारों के लिए पशुधन सहायक आय का स्रोत है

भोजन - खाने योग्य अनेक उत्पाद प्राप्त होते हैं

सामाजिक सुरक्षा -: जानवर अपनी स्थिति के अनुसार मालिकों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते हैं

रोजगार -: पशुपालन से गैर कृषि मौसम में रोजगार मिलता है।

गोबर -: कई उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता है जैसे ईंधन, गोबर के उपले, उर्वरक, खेत की खाद, आदि

जोखिम न्यूनीकरण -: छोटे और सीमांत किसानों के लिए



डेयरी फार्मिंग

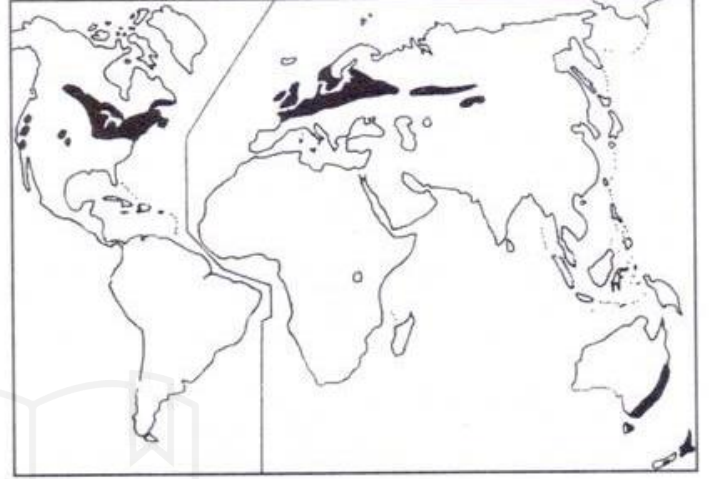
डेयरी में पशु पालन कर के व्यवसाय को शुरू किया जा सकता है। लगभग सभी घरों में दूध व दूध से बने पदार्थों का सेवन किया जाता है।



डेयरी उत्पादों का वैश्विक उत्पादन

- दुनिया भर में लगभग 150 मिलियन परिवार दुग्ध उत्पादन में लगे हुए हैं।
- भारत - दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक, वैश्विक उत्पादन का 22 प्रतिशत, इसके बाद अमेरिका, चीन, पाकिस्तान और ब्राजील का स्थान है।
- उच्चतम दूध अधिशेष - न्यूजीलैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया और आयरलैंड।
- सबसे अधिक दूध की कमी - चीन, इटली, रूसी संघ, मैक्सिको, अल्जीरिया और इंडोनेशिया।
- स्वीडिश डेयरी उत्पादन बहुत गहन है और यूरोप में दूध की पैदावार सबसे अधिक है।
- दूध और दुग्ध उत्पादों की प्रति व्यक्ति खपत विकसित देशों में अधिक है, लेकिन कई विकासशील देशों के साथ अंतर कम होता जा रहा है।
- भारत - ~ 50% दूध की खपत देश में ही की जाती है।
- दूध अफ्रीका और एशिया में आहार ऊर्जा आपूर्ति का 3 से 4 प्रतिशत प्रदान करता है, जबकि यूरोप और ओशिनिया में यह 9 प्रतिशत है; यूरोप में 19 प्रतिशत की तुलना में अफ्रीका और एशिया में आहार प्रोटीन की आपूर्ति का 6 से 8 प्रतिशत; और अफ्रीका और एशिया में आहार वसा की आपूर्ति का 7 प्रतिशत, यूरोप, ओशिनिया और अमेरिका में 12 से 14 प्रतिशत की तुलना में।

Dairy farming areas of the world



फूलों की खेती

- बागवानी की शाखा, प्रसंस्करण और विपणन से संबंधित है
- सजावटी पौधे छोटे क्षेत्रों में आसानी से उगाये जा सकते हैं
- भारत में प्रमुख उत्पादक राज्य कर्नाटक-
- अन्य राज्य - दक्षिण में तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश, पूर्व में पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र
- पश्चिम में राजस्थान, उत्तर में दिल्ली और हरियाणा।
- विश्व : नीदरलैंड(%52) , कोलंबिया(%15) , इक्वाडोर(%9) , केन्या(%7) , बेल्जियम(%3) , इथियोपिया(%2) , मलेशिया(%1) , इटली (%1) , जर्मनी(%1) , इज़राइल(%1)



सजावटी पौधों का वर्गीकरण

- | | |
|--|---|
| <ul style="list-style-type: none"> • जीवन काल के आधार पर <ul style="list-style-type: none"> ○ वार्षिक ○ द्विवार्षिक ○ सदाबहार • वृद्धि के मौसम के आधार पर <ul style="list-style-type: none"> ○ शीत ऋतु वार्षिक ○ ग्रीष्म ऋतु वार्षिक ○ वर्षा ऋतु वार्षिक • पौधे के प्रकार के आधार पर <ul style="list-style-type: none"> ○ हर्बिसियस लिलियम, वर्बेना, वायोला, आदि। ○ झाड़ियाँ बोगनविलिया, चमेली, लॉनोनिया, हैमेलिया, निकटेन्थेस, गुलाब, टेकोमा, आदि। | <ul style="list-style-type: none"> ○ पेड़ गुलमोहर, पलाश, अमलतास, कदम्ब, भारत का गौरव आदि। ○ पर्वतारोही और रेंगने वाले एडेनोकैलिम्मा, एंटीगोनन, रंगून क्रीपर, मधुलता, पेट्रिया, थुनबर्गिया, आदि। • प्रसार के तरीके के आधार पर <ul style="list-style-type: none"> ○ बल्बनुमा पौधे - लिली, नार्सिसस, ट्यूबरोज, ट्यूलिप, आदि। ○ कॉर्मस पौधे - क्रोकस, हैप्पीयोलस, ट्रिटोनिया, वाट्सोनिया, आदि ○ रहिजोमेटस पौधे - कन्ना, हेडिचियम, आईरिस, कमल, आदि। ○ कंद - बेगोनिया, डहलिया (जड़ कंद), आदि |
|--|---|

वैश्विक उत्पादन



- **यूरोप**
 - अधिकांश सजावटी पौधों का उत्पादन किया जाता है।
 - **नीदरलैंड्स** -
 - जर्मनी
 - ✓ नर्सरी और बगीचे में।
 - ✓ बहुत सारे फूल और गमले वाले पौधे पैदा होते हैं।
 - डेनमार्क
 - ✓ अन्दर रखने वाले पौधों के लिए प्रसिद्ध।
 - ✓ यूके, बेल्जियम और स्पेन - छोटे खिलाड़ी।
 - ✓ कुल उत्पादन मूल्य - 10 अरब डॉलर।
 - ✓ कटे हुए फूलों के उत्पादन में सबसे बड़ी हिस्सेदारी वाले देश - जर्मनी (11%), इटली (18%) और नीदरलैंड (35%)।
- **उत्तर और दक्षिण अमेरिका**
 - सजावटी फूलों के उत्पादन में मुख्य रूप से फूल शामिल हैं।
 - उत्तरी अमेरिका (यूएसए और कनाडा) -
 - ✓ 80% फूल और गमले वाले पौधे उगाए जाते हैं।
 - ✓ कैलिफोर्निया और फ्लोरिडा - सबसे महत्वपूर्ण उत्पादन क्षेत्र।
 - दक्षिण अमेरिका
 - ✓ कोलंबिया (6%), मेक्सिको (3%), कोस्टा रिका और इक्वाडोर - प्रमुख उत्पादक।
 - ✓ ब्राजील (6%) - गमले में लगे पौधों की मुख्य सामग्री और कलमों का उत्पादक रहा है।
- **अफ्रीका**
 - क्रमशः केन्या, तंजानिया, दक्षिण अफ्रीका और युगांडा
 - देश में राजनीतिक स्थिति के कारण जिम्बाब्वे और आइवरी कोस्ट में उत्पादन में कमी आई है।
- **एशिया**
 - विकासशील देशों से शायद ही कोई आंकड़ा।
 - जापान
 - ✓ पारंपरिक रूप से आभूषणों में विशिष्टताओं का निर्माता।
 - दक्षिण कोरिया, भारत और थाईलैंड
 - ✓ उत्पादकों की कतार में आगे आ रहा है, इसके बाद ताइवान का स्थान है।
 - ✓ निर्यात चीन, वियतनाम, भारत आदि देशों से शुरू हो रहा है।
- **ओशिनिया**
 - ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड - कटे फूल- अपेक्षाकृत छोटे उत्पादक।